नष्ट करनी होगी आर्थिक विषमता

1975 में एक डॉलर की कीमत 10 रु. हुआ करती थी. आज डॉलर 64 रु. का है. इसका परिणाम हम सब पर क्या होता है? एक तो तेल की कीमतों में बढ़ोतरी हो जाती है. तेल का एक बैरल आज 100 डॉलर है. जो तेल हम 1000 रु. में खरीद सकते थे, वह आज छह हजार रु. में लेना पड़ रहा है. रुपए के अवमूल्यन के कारण भारत में आने वाली हर वस्तु के लिए आज दस गुना रकम देनी पड़ती है. परिणामस्वरूप महंगाई दस गुना बढ़ गई है.

सिक्के के दूसरे पहलु को देखें तो बहुराष्ट्रीय अमेरिकन कंपनी भारत में कोई भी वस्त, कौड़ियों के दाम खरीदने में समर्थ है. उदा. भारत में एक दवा कंपनी की कीमत 600 करोड़ थी. 1975 की भाव से उसकी कीमत 60 करोड़ डॉलर्स में होती, किंतु आज की दर से उसे दस करोड़ डॉलर में खरीद डाला. इसका ही अर्थ यह है कि विदेशी पूंजीपतिया के लिए भारत में कोई भी वस्तु कौड़ियों के मोल उपलब्ध है. यह सारा खेल अमेरिकाकी विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष का है. आज रक्षा क्षेत्र में 49 प्रतिशत और बहुत से उद्योगों में 100 प्रतिशत एफडीआई (सीधा विदेशी पुंजी निवेश) विश्व बैंक के पेंशनर मनमोहन सिंह ने लाया है. अगले पांच वर्षों मे देश के सरकारी अस्पतालों से लेकर दूरसंचार, टेलीविजन, शक्कर कारखाने, बैंकों आदि पर विदेशी मालकियत होगी. बंदूक की एक भी गोली न चलाते हुए भारत के सभी प्राकृतिक संसाधनों और मानव निर्मीत संसाधन गोरों के हाथ में चले जाएंगे. इस काम को पूरा करने के लिए 2014 के चुनावों में नरेंद्र मोदी या राहुल गांधी ही प्रधानमंत्री बनेंगे, ऐसा प्रसारमाध्यमों के जरिए अत्यंत आक्रमक तरीकेसे प्रचार किया जा रहा है. और कोई विकल्प नहीं बचा है, ऐसा जनता के मन में बैठाया जा रहा है. और ये दोनों नागनाथ और सांपनाथ देश को बेच डालने के लिए तैयार बैठे हैं.

इसीलिए देश को स्वतंत्रता मिलने के दूसरे दिन यानी 16 अगस्त 1947 को मुंबईमं निकाले गए ऐतेहासिक जुलूस के मौके पर अण्णाभाऊ साठे ने कहा था- 'ये आजादी झूठी है, देश की जनता भूखी है.' अण्णाभाऊ द्वारा रखे गए खतरनाक सत्य का आज हमें बार-बार महसूस हो रहा है. 'ये आजादी झूठी है' यानी आज हमें जो स्वतंत्रता मिली है, वह वास्तविक नहीं है. हम आज भी गुलाम हैं. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने कहा था 'गुलाम को अगर उसकी गुलामी का अहसास करा दो, वह विद्रोह कर उठेगा. 'थर्ड आई'लेखमाला के माध्यम से मेरा यही प्रयत्न है. घोर दारिद्र्यमें फंसा यह समाज और दरिद्र होता जा रहा है. उपर से आज के राज्यकर्ता उसका और भी क्रूर उपहास बना रहे हैं. जिसकी मासिक आमदनी 24 रु. है वह गरीब नहीं है, ऐसा कहने का साहस

घृणित ऐश्वर्य में रहने वाले लोग कर रहे हैं. '5 रु. और 12 रु. में पेटभर अन्न मिल सकता है.' ऐसा वक्तव्य देने वाले सैतानी नेताओं के अण्णाभाऊ के साहित्य के शोषणकर्ता होने की बात सिद्ध हुई है.

साम्यवाद को अंगीकार करते समय अण्णाभाऊ यही कहते रहे थे कि, अमेरिकन पूंजीवाद लोकतंत्र का काल है, क्यों कि पूंजीवादी,उद्योगपति, व्यापारी, अपने राजनीति नेताओं को खरीद लेते हैं. अधिकारी वर्ग, उच्च मध्यम वर्ग भागीदारी के लिए आगे आता है. काले धन के आधार पर आर्थिक व्यवहार की एक समांतर व्यवस्था पैदा की गई है. आज 50 से 60 प्रतिशत आर्थिक लेनदेन काले धन में होते हैं. इस लेनदेन में सामान्य जनता यानी कि 95 प्रतिशत भारतीय जनता नहीं आती. संविधान के खिलाफ गैरकानूनी आर्थिक व्यवहार के लिए काले धन की व्यवस्था काम कर रही है. काले धन वाले अश्लील अमीरी में रहते हैं. दिन भर में लाखों रु. अपनी मौजमस्ती पर खर्च करते हैं, उसके कारण भारतीय उत्पादन का एक बडा हिस्सा वे डकार जाते हैं. इसके परिणामस्वरूप महंगाई में भारी बढ़ोतरी होती है. इस काले आपराधिक धन का उपयोगकर संविधान पर आधारित चलने वाली व्यवस्था को भ्रष्ट कर दिया गया है. कोई भी सांसद, विधायक या अधिकारी अगर भ्रष्ट न हो तो वह टिक ही नहीं सकता. राजनीतिक नेता पूंजीपति, माफिया के गुलाम हैं और पूंजीपति, माफिया बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दलाल हैं.

आर्थिक समता आए बगैर सामाजिक समता नहीं आ सकती और सामाजिक समता के बिना संविधान में उल्लिखित समान न्याय, समान अधिकारों, के सिद्धांत का क्रियान्वयन ही नहीं हो सकता. आर्थिक समता के संघर्ष की ओर लोगों को मोड़ने का हमारा प्रयत्न है. नेताओं ने बहुजन नायकों को जातिव्यवस्था में जकड़ कर रख दिया. छत्रपति शिवाजी महाराज से लेकर टिपू सुलतान, महात्मा फुले, शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर, अण्णाभाऊ साठे के क्रांतिकारी कार्य मानवता कोप्रेरित रहे हैं. उन्होंने कभी किसी विशिष्ट जाति को लक्ष्य कर कार्य नहीं किया. इसीलिए इस मानवता को लक्ष्य कर जाति अंत का संघर्ष, निर्णायक संघर्ष की नींव है. किसानों, श्रमिकों, और मेहनतकशों को तोड़ने के लिए जाति और धर्म के आतंकवाद इस देश में पैदा किया गया है. राजनीतिक दल जनता को संघर्षरत रखने के लिए चुनाव के वर्ष में हर वर्ष की तरह कोई न कोई विषय पैदा करते हैं. आज तेलंगाना का मुद्दा जानबूझकर पैदा किया गया और देश के अनेक भागोंमें हिंसा का दावानल भड़काया गया. अब होगा यह कि पेट की भूख से जुड़े मुद्दे तो दरकिनार हो जाएंगे और जनता का ध्यान धार्मिक,जातीय और प्रांतीय मुद्दों पर केंद्रित कर दिया

जाएगा.

आज अंबानी, टाटा, बिर्ला देश को लूट रहे हैं. राजनीतिक व्यवस्था उनकी गुलाम बन गई है. अमीरों को और स्वयं को और अधिक अमीर बनाने में अपने देश के राजनेता मग्न हैं. इन सब बातों परकेवल चर्चा करने का कोई उपयोग नहीं है, बल्कि आर्थिक विषमता नष्ट कर वास्तविक आजादी इस देश को प्राप्त करवाने के लिए हम सब समाज और मजहब के लोग रमजान ईद के पवित्र मौके पर बुराई को खत्म करने के लिए आगे आये . और एक असली आजादी का संघर्ष दुबारा खडा करे . मोदी का बडा कर मुसलमानों की वोट बैंक को अपने कब्जे मे रखने की कॉग्रेसी चाल को पहचाने . भाजप और कॉग्रेस ये सापनाथ और नागनाथ दोनोही आरएसएस के अंग है . कॉग्रेस और उसका दुसरा चेहरा भाजपा इन दोनो को सत्ता से उखाड के आरएसएस मुक्त भारत का निर्माण करें .

लेखकः ब्रिगेडीयर सुधीर सावंत
वेबसाईटः**www.sudhirsawant.com**
मोबा .नंः ९९८७७१४९२९